Artistic Narration: *A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art* **ISSN (P): 0976-7444**
Vol. IV. , 2013

गोदना भारतीय ''लोक कला का आधुनिकीकरण

स्तुति पाण्डेय
स्वतन्त्र कलाकार–रायबरेली
पी0एच0डी0
महात्मा गॉधी चित्रकूट ग्रोमोदय विष्व विद्यालय
चित्रकूट, सतना (म0प्र0)

भारत की कला एवं संस्कृति देष के विभिन्न भागों में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विष्व में अपना विषेष स्थान रखती है। इसीलिए तो विभिन्न देष के पर्यटक यहां की कला व संस्कृति के कायल है, और दूर–दूर से यहाँ आकर उसका अनुभव प्राप्त करते हैं।

जहां तक बात है यहां की संस्कृति की तो उससे सभी भली–भांति परिचित है। अगर हम एक उदाहरण लोगों के समक्ष रखें तो उनमें से ही अनेक उदाहरण और हमारे समक्ष प्रकट हो जाते है। भारत में विभिन्न प्रकार की जातियां निवास करती है और एक दूसरे की संस्कृतियों का हृदय से सम्मान कर स्वागत करती है। इसीलिए तो कहा जाता है कि भारत न केवल संस्कृतियों का देष है अपितु विभिन्न जातियों के लोगों का भी देष है, जो दिन–प्रतिदिन अपने को विकसित करने में लगे हुए है और हमारे भारत देष जो कला संस्कृति का संगम है उसे आगे बढ़ाने के प्रयास में कार्यरत है।

इसके साथ ही अगर बात की जाए यहां के कलाओं की तो शायद इनकों गिनना भी असम्भव हैं, क्योंकि यहां पर विभिन्न राज्य, विभिन्न राज्यों में विभिन्न जातियां, और विभिन्न जातियां की अपनी अलग कला। जो वर्षों से धीरे–धीरे अपने अथक प्रयासों से सभी देषों में अपना नाम कायम कर चुके है या कर रहे है।

अगर हम देखें तो यहां के विभिन्न राज्यों की अपनी–अपनी विषेष कला है। जिससे सभी भली–भांति परिचित है। अगर उदाहरण दे तो बिहारी की मधुबनी कला, गुजरात की पटचित्र कला, महाराष्ट्र की वर्ली कला, आदि अनेक कलाएं हमारे समक्ष प्रकट हो जाती हैं। इन्ही कलाओं में एक लोक प्रिय कला है जिससे लोग अपनी कला व संस्कृति का एक अभिन्न अंग मानते हैं और प्रायः स्त्रियों के मुख्य व अहम् श्रृंगारों में से एक हैं। जिसे भारतीय लोक भाषा में ''गोदना'' कहा जाता है और आधुनिक भारतीय जगत में जिसे हम ''टैटू'' के नाम से जानते हैं।

'गोदना' मुख्यतः भारत के हर राज्य में प्रसिद्ध है। इसी भारत के मध्य में छत्तीसगढ़ एक ऐसा प्रदेष है जो अनेक लोक कलाओं को अपने में समाहित किए है। यहां पर निवास करने वाली जनजातियां जिनका जीवन कृषि और जंगल के इर्द–गिर्द रहकर जीवन–यापन करना है, इसके अतिरिक्त अपनी लोक कला व लोक संस्कृति को दिन–प्रतिदिन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानान्तरित करना भी है। इस प्रदेष की लोक कलाओं में भित्ति चित्र, मृदा–षिल्प और गोदना को चिंहित किया जा सकता है। जिसमें हम उल्लेख करेंगे ''गोदना'' लोक कला का । प्रायः हम उम्रदराज स्त्रियों के हाथ–पांवों पर सुन्दर, कलात्मक, सांकेतिक चिन्हों व प्रतीकों से सजे गोदने को देखते हैं। हल्के नीले–काले रंग में शरीर पर अंकित की गई यह लोक कला न सिर्फ कला है, अपितु गहराई तक लोक–विष्वास भी छिपे होते हैं।

'गोदना' तो एक कला है, परन्तु क्या गोदा जा रहा हैं, उसमें भी कला–दृष्टि होती है। माना जाता है कि गोदना स्त्रियों के लिए जीवन भर का स्थायी श्रृंगार है, सौन्दर्य वृद्धि का साधन है, साथ ही इसकी पृष्ठ–भूमि में अनेक प्राचीन मान्यताएं, लोकविष्वास तथा प्रतीकात्मक अर्थ छिपे होते है। यहां निवास कर रही सभी जनजातियों के अनुसार, ''मृत्यु के उपरान्त भौतिक जगत की सभी वस्तुएं इसी लोक में छूट जाती हैं। किन्तु गोदना आत्मा के साथ परलोक तक जाती है। इन गोदनों में निहित लोक विष्वास भी आत्मा के साथ जाकर न सिर्फ उनकी रक्षा करती है वरन् अलंकरणों के द्वारा उनके सौन्दर्य में अभिवृद्धि भी करती है।'' कहते हैं यहां की अनेक जनजातियों में गोंड जन जाति भी है जिसकी एक शाखा वादी जनजाति है, जिसकी स्त्रियां यह कार्य करती है। स्त्रियां अधिकांश प्रतीकात्मक गोदने को ही प्राथमिकता देती हैं। उनका मानना है कि ये प्रतीकात्मक गोदना ईष्वरीय प्रतीक होता है, जो हर पल हमारी रक्षा करते हैं। इन प्रतीकों में सूर्य, चन्द्रमा, सर्प, तारे, अग्नि कमल शंख आदि अन्य ईष्वरीय स्वरूप हैं।

कई लेखकों के अनुसार गोदना सिर्फ अलंकरण ही नहीं है वरन् इसके आरम्भ होने के दो मूल कारण भी है। प्रथम कारण गोदना के प्रतिरोधात्मक अभिप्रायों का अलंकरण करके प्रतिकूल अभिचरों और जादू–टोने से सुरक्षा कवच का निर्माण करता है और दूसरा कारण, प्रजनन–षक्ति को जागृत कर मातृत्व को अनुनेय करना। इनके अतिरिक्त अन्य लेखकों का मत है कि जन–जातियों के लोग आर्थिक अभावों एवं कठिन भौगोलिक व सामाजिक परिवेष में रहते हैं। सर्दी, गर्मी, वर्षा आदि में वे खुले बदन में कठिन परिश्रम करते हैं। गोदना इनके शरीर में जलवायु प्रतिरोधक शक्ति देता है।

ये लोग गोदना के लिए बांस की बारीक सींक का प्रयोग करते हैं। जड़गी के तेल का दिया जलाकर उससे उठते धुएं को उल्टे खपरे में जमा करते है और इस काजल में पानी मिलाकर सींक से शरीर पर इच्छित स्थान पर चुभोते हैं। काजल, सींक से बनाए गए बारीक छेद से त्वचा में प्रविष्ट होता है और जीवन–भर के लिए स्थायी हो जाता है। पहले कुछ दिन इसके उभरे हुए घाव दिखाई देते है बाद में ये स्थायी अलंकरण का रूप ले लेते हैं। अनेक जातियों में काजल या रंग अलग–अलग चीजों से तैयार किए जाते हैं, जैसे– बालोर का रस भिलवां का रस, मालवन वृक्ष का रस आदि। किसी विषेष प्रकार की सुई का उपयोग करते है या बबूल के कांटे का। आदिवासियों के अलावा अन्य जातियों के लोगों में भी गोदने का प्रचलन है। लोक विष्वासों से गोदनों का सम्बन्ध निष्चित है।

जहां गोदना एक लोकप्रिय लोक–कला है, वहां आज के आधुनिक जन–जीवन में यह विलुप्त होता जा रहा है। लोग गोदना कराने में जहां शर्म महसूस करते है वहीं यह कला अपना मूल नाम भी खोती जा रही है और वर्तमान ''टैटू'' ने ले लिया है जो इसी का एक स्वरूप है। जहां पर लोग इसे लोक विष्वासों का प्रतीक मानकर सम्मान देते है वहीं आज के आधुनिक जगत में लोगों ने इसे फैषन का नाम दे दिया है। इसे जीवन भर का श्रृंगार मानने के बजाए कुछ दिनों का ही शौक बना दिया है। आज हम इन गोदनों के स्वरूप में प्रतीकात्मकता के स्थान पर अन्य प्रकार चित्रण प्राप्त करते हैं।

यदि इसी प्रकार गोदना का नाम व स्वरूप का स्थान 'टैटू' ने ले लिया तो भविष्य में इसका नामों निषान मिट जाएगा। अतः इस लोक कला को जीवित रखने का कार्य सभी मानव जाति का है।